प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय
को प्रतिनिधि चाहिए
साहित्यिक,सांस्कृतिक व सामाजिक
अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें-+91 8839797448/9424443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ१९६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ अंक- ७७ भोपाल, २७ सितंबर, डाक २८ सितंबर २०२५ भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित पृष्ठ -८ मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

गांव है मेरा अतीत शहर है वर्तमान। नहीं विधि का विधान है मेरा अरमान।।

अग्र विचार
विचार प्रवाह-२८३

कैलाश आदमी

हर व्यक्ति ख्वाहिशमंद होता है। उसकी तमाम ख्वाहिशें होती हैं। ख्वाहिश होना जिंदादिली की पहचान है। यह पहचान बचपन में ही परवान चढ़ने लगती है। बाल्यावस्था में आप स्वयं झांककर देख सकते हैं।

हम जब अपने बचपन की याद करते हैं तो मन में तमाम ख्वाहिशें अंगड़ाइयां लेने लगती हैं। बचपन में बच्चों को कौन सिखाता है कि उसे किस चीज की जरूरत है बल्कि वह नेसर्गिक रूप से कुछ पाने की इच्छा रखता है। उसकी जलपान या दुग्धपान की इच्छा या ख्वाहिश उसकी मां पूरी करती है। वह इशारे से मां को अपनी इच्छा बताता है और मां उसका समाधान करती है।

यह कोई विधि का विधान नहीं कि मेरा बचपन गांव से शुरू हुआ जिसे मैं अपना अतीत कह सकता हूं जबकि शहर में वर्तमान है लेकिन अतीत को मैं कभी नहीं भूल पाता। वहां मुझे अपने माता-पिता और घर के बुजुर्गों ने पाल पोशकर बड़ा तथा शिक्षा देकर मुझे ज्ञानवान बनाया। आरंभ में मैं अपनी पढ़ाई के सिलसिले में शहर-दर-शहर घूमता रहा। गांव से जब पहली बार अशोक नगर जिसे उस समय टकनेरी और/अथवा पछार नाम से ज्यादा जानते थे क्योंकि स्टेशन पर भी यही लिखा रहता था। वहां जब में पहली कक्षा का विद्यार्थी था तब मैंने पहली बार रेल और मोटर देखी थी। गांव से इस शहर तक मुझे अपने माता-पिता बैलगाड़ी से लाए थे। बीच में शारोड़ा नामक गांवनुमा कस्बा पड़ा तब मैंने किसी रेलगाड़ी या मालगाड़ी के दर्शन किए थे और पहली बार रेल की पटरी बैलगाड़ी में बैठकर पार की थी। अशोक नगर में उस समय पहली बार एक वर्ष तक रहने का मौका मिला लेकिन मेरे पास उन दिनों की केवल कुछ धुंधली यादें ही शेष हैं लेकिन जब भी गुजरे हुए दिनों या अतीत पर नजर डालता हूं तो मेरी आंतरिक संवेदनाएं जाग्रत हो जाती है बल्कि यह कहना ज्यादा उचित होगा कि हमारे भीतर के संवेदना के तार उसी तरह जुड़ जाते हैं जिस तरह हम विद्युत तारों के जुड़ने पर प्रकाशित होते हैं। ये मन की कोमल भावनाएं होती हैं जो मुझे अतीत से जोड़े रखती हैं।

अशोक नगर में भले ही मैं आरंभ में केवल एक वर्ष ही रह पाया होऊं लेकिन मेरे अपने पैतृक गांव डुंगासरा जागीर में मुझे लौटना पड़ा जहां मैं प्राथमिक परीक्षा उत्तीर्ण होने तक रहा। तत्पश्चात पांच किलोमीटर दूर स्थित नई सराय गांव में तीन वर्ष रहकर माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण की और उसके बाद फिर मुझे आगे अध्ययन के लिए अशोक नगर आना पड़ा। कुछ गांव ऐसे होते हैं जिन्हें हम कभी भूल नहीं पाते। ऐसे ही गांवों में मैं अपने पैतृक गांव डुंगासरा के साथ नई सराय को भी याद करता हूं। मैंने अपने गांव में जहां जातिगत और संप्रदायगत भेदभाव का प्रत्यक्ष अनुभव किया वहीं नई सराय में अध्ययन के दौरान यह जान सका कि हिंदुओं के अलावा मुस्लिम भी होते हैं तथा उनके रीति-रिवाज हिंदूओं से काफी मिलते-जुलते हैं। केवल पूजा-पद्धति भिन्न होती है। नई सराय में जितने मुसलमान उन दिनों रहते थे, उनके बुजुर्ग बताते थे कि वे मूलतः सनातनी हिंदू हैं किंतु रोजगार और सरकारी सहूलियतें पाने की इच्छा से उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया। नई सराय के ९० प्रतिशत मुसलमान कायस्थ थे और चूंकि मेरा जन्म भी कायस्थ कुल में हुआ इसलिए मुझे नई सराय में भाईचारे का अनुभव हुआ और अशोक नगर तथा आगे चलकर गुना में पढ़ाई के दौरान बीच में जब भी कोई त्योहार पढ़ता तो डुंगासरा जाने के पहले नई सराय में अवश्य पड़ाव डालता था। इस दौरान वहां मुझे सदैव लोगों को प्यार और सम्मान मिलता तथा बचपन के दोस्तों के साथ समय गुजारता तो ऐसा नहीं लगता कि मैं किसी अजनबी या पराये गांव में दाखिल हुआ।

दरअसल मुझे गांव और कस्बानुमा अशोक नगर जैसे शहर ने ही यह सिखाया की नाते-रिश्ते और दोस्ती यारी क्या होती है। शहरियत से तो मैं बाद में परिचित हुआ और परिचित होने पर जान पाया कि हर शहर की अपनी एक तासीर होती है। अशोक नगर की अपनी तासीर, गुना जिला मुख्यालय की अपनी और भोपाल जैसे राजधानी वाले शहर की अपनी अलग ही तासीर दिखाई दी। जिन दिनों मैं पढ़ाई के लिए भोपाल आया था उन दिनों पुराने शहर में रहने का अवसर मिला। तब मैंने देखा कि पटिएबाजी क्या होती है? खासकर वे मुसलमान जो कहीं किसी तरह का कारोबार नहीं करते और ना ही नौकरी करते ऐसे निठल्ले लोग प्रायः नित्य ही अपने घर के बाहर बने पटियों पर बैठकर गप्पे लगाया करते थे। जब कभी मैं ऐसे पटिएबाजों के आगे से गुजरता तो वे दुआ-सलाम करने के साथ ही मुझे टोककर पूछा करते- भाई मियां आज कल क्या चल रहा है? दरअसल वे जान गए थे कि मैं पढ़ाई के साथ किसी अखबार में भी खबरनवीसी का काम करता हूं। यह छठे-सातवें दशक की बात है। जिन दिनों देश के पहले प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू का निधन हुआ उन दिनों का ही वाकिया है। पटिएबाज यह भरोसा नहीं कर पा रहे थे कि पं. नेहरू चल बसे। मैंने उन्हें यकीन दिलाया कि आज ही उनका इंतकाल हुआ है तब कहीं जाकर वे भरोसा कर पाए और ज्यों ही उन्हें भरोसा या यकीन हो गया तो उनकी आंखों का गीलापन बता रहा था कि उन्हें यह जानकर बहुत दुख हुआ है। पटिएबाजों में जो सबसे बुजुर्ग सज्जन थे उनका कहना था कि यदि भारत की हुकुमत बंटवारे के समय पं. नेहरू जैसी शख्सियत के हाथ में ना होती तो वे हिंदुस्थान छोड़कर पाकिस्तान चले गए होते। इससे पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि पं. नेहरू का कितना प्रभाव भारत की कोमों पर रहा। उन्हें ना केवल हिंदू और मुसलमान बल्कि हर कौम के लोग इज्जत देते थे और उन पर यकीन करते थे।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

गांव है मेरा अतीत शहर है वर्तमान।
नहीं विधि का विधान है मेरा अरमान।।

पांचवें दिन स्कंदमाता की आराधना

पूनम श्रीवास्तव, अंक शास्त्री

पितृपक्ष के बाद नौरात्रि के दौरान चारों तरफ उमंग का माहौल है। इस माहौल में भक्ति की लहरें दौड़ रही है। चहुं ओर माता की जय जयकार की आवाज़ गूंज रही है। मंदिरों की घंटियों की मधुर ध्वनि कानों में मधुर रस घोल रही है। नवरात्रि में पांचवा दिन स्कंदमाता का दिन था। वे दयामयी, ममतायी एवं प्रेममयी माता के रूप में जानी जाती हैं और अपने भक्तों पर स्नेह, करुणा तथा प्रेम बरसाती रहती है एवं अपने भक्तों पर मातृत्व लुटाती हैं।

इसी प्रकार अंक शास्त्र का नंबर पांच बुध ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है। वह एक चंचल बालक के रूप में जाना तथा समझा जाता है। बुद्ध एक ऐसा ग्रह है जो अति गतिशील होता है। उसको नियंत्रित केवल उसकी मां करती है। उसे प्रेम से स्नेह से नियंत्रित किया जाता है स्कंदमाता का स्वरूप और बुध ग्रह की आपस में गहरी समानता प्रतीत होती है। नवरात्रि के पांचवें दिन स्कंदमाता की पूजा की गई । स्कंदमाता भगवान स्कंद (कार्तिकेय) की माता हैं और नवदुर्गा का पांचवां रूप हैं। उनकी पूजा से मातृत्व, प्रेम, और स्नेह की भावना में वृद्धि होती है। धन धान्य, सौभाग्य, समृद्धि और मातृत्व प्राप्त होता है स्कंदमाता की आराधना तथा पूजा करने से व्यक्ति को सुख, शांति और समृद्धि की प्राप्ति होती है तथा जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

इस सबके बीच अंक शास्त्र और देवी के चतुर्थ दिन की समानता की बातें भी समसामयिक होंगी। चतुर्थ दिन माता कूष्मांडा और राहु का था। राहु अचानक कुछ भी कर सकता है। माता की भक्ति करने वाले उनके भक्त भली भांति जानते हैं कि जब मैया कृपा करती हैं तो अपने भक्तों की झोलियां भर देती हैं। इसी प्रकार जब राहु मेहरबान होता है तो धन संपदा की कोई कमी नहीं रहती। माता को ब्रह्मांड की रचयिता भी कहते हैं। माता की अष्टभुजाएं हैं। अष्टभुजा से वे अपने भक्तों के ऊपर कृपा करती हैं। इसी प्रकार अगर हम देखें तो माता जी का चतुर्थ दिन और अंक शास्त्र का नंबर चार काफी हद तक आपस में समानता लिए हुए हैं।

- नेहरू नगर, कोटरा, भोपाल

शख्सियत: पुस्तकों की दुनिया से अब बहुत दूर जा चुके हैं लोग

सरिता गर्ग 'सरि'

डिजिटल युग में लोग पुस्तकों से दूर होते जा रहे हैं। भारत में भी जिस दिन नेट नहीं चलता लोगों की चिंता बढ़ जाती है। रात -रात भर करवटें बदलने लगते हैं। डॉटा लगातार महंगा हो रहा है, लेकिन मोबाइल हाथ से नहीं छूटता। यह कथन है श्रीमती सरिता गर्ग 'सरि' का जो उन्होंने निर्दलीय से जुड़े पत्रकार नरेंद्र गौड़ से साक्षात्कार के दौरान व्यक्त किया।

श्रीमती सरि जो निर्दलीय प्रकाशन में मानद सह संपादक हैं, ने कहा कि आज के इस डिजिटल युग में लोग किताबों से दूर होते जा रहे हैं और मोबाइल लैपटाप की दुनिया में गुमशुदा हैं। मोबाइल ने इंसान को एकाकी बना दिया है। वहीं आपसी सम्बंधों की मर्यादा टूट रही है। आज की पीढ़ी किताबों से दूर हो चुकी है। जिसे देखों वही मोबाइल की तरफ झुका नजर आता है।

श्रीमती सरि का कहना है कि आज खेल के मैदानों में मॉल या फिर बहुमंजिला इमारतें बन चुकी हैं और कुछ एक मैदान हैं भी तो वहां बच्चों की किलकारियां अब नहीं गूंजती। बच्चे मोबाइल पर गेम खेलते नज़र आते हैं।

निर्दलीय के एक सवाल के जवाब में सरिता जी ने कहा कि सोशल मीडिया भारत की नहीं दुनिया के तमाम देशों को अपनी गिरफ़्त में ले चुका है। नेपाल सरकार ने फेसबुक, इंस्ट्राग्राम, मेसेंजर, यूट्यूब आदि सोशल मीडिया पर बैन लगा दिया तो वहां युवा पीढी सड़कों पर उतर आई। प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली के मकान में आग लगा दी और वह इस्तीफा देकर भाग गये। कई शहरों में कर्फ्यू लगाना पड़ा। अनेक लोग मारे गए। पूरा देश अराजक हालात से गुजरा और तखूता पलट हो गया। यह घटना साबित करती है कि सोशल मीडिया से महरूम करने के क्या परिणाम होते हैं और इसने युवाओं के दिलो दिमाग़ पर किस क़दर क़ब्जा कर लिया है। भारत में भी जिस दिन नेट नहीं चलता लोगों की चिंता बढ़ जाती है। रात -रात भर करवटें बदलने लगते हैं। डॉटा लगातार महंगा हो रहा है, लेकिन मोबाइल हाथ से नहीं छूटता।

एक अन्य सवाल के जवाब में सरिता जी ने निर्दलीय से कहा कि नेपाल में भयंकर ग़रीबी है, वहां के लाखों युवक रोज़गार के लिए अन्य देशों में छोटे मोटे काम करने को मजबूर हैं। वहीं सोशल मीडिया प्लेटफार्म वहां के युवकों की आय का ज़रिया भी है। इसके व्दारा वहां रोजी रोटी चलती है। भारत में भी हालत बेहतर नहीं है। यहां भी भयंकर बेरोजगारी है और ऐसी हालत में जहां भी काम मिल जाये लोग करने को मजबूर हैं। सोशल मीडिया भी आय का जरिया है, लेकिन नेट बैलेंस सस्ता होना चाहिए।

एक सवाल के जवाब में सरिता जी ने कहा कि टीवी के ज़रिये जो समाचार प्रसारित होते हैं, उन चैनलों पर पूंजीपतियों का कब्जा है, ऐसे में आम आदमी की त़कलीफ़ उजागर नहीं होती है। देश की प्रमुख समस्याएं मसलन बेरोजगारी, महंगाई, खाद्यान्न संकट, पेट्रोल, डीजल की बढ़ती कीमतें आदि को लेकर खबरें ग़ायब हैं। समूचा मीडिया गोदी मीडिया में तब्दील हो चुका है। सरिता जी का कहना था कि वक्त़ का एक दौर था जब हाथों में क़िताबें लिये युवाओं को देखना आम बात थी। बसों और ट्रेनों में लोग अख़बार, पत्रिकाएं और क़िताबें पढ़ते नजर आते थे, लेकिन आज तो सभी के सिर मोबाइल की तरफ झुके दिखते हैं। घरों में भी परिवार के सभी सदस्यों के बीच बातचीत नहीं होती हैं, सभी अपने-अपने मोबाइल चला रहे होते हैं। पहले जहां लोग अपने पड़ोसी से घंटों बोलते बतियाते थे, औरतें एक दूसरे के घर जाकर सुख दुख बांटती थी, ऐसे रिश्ते अब दम तोड़ चुके हैं। आदमी से आदमी दूर हो चुका है।

उल्लेखनीय है कि सरिता जी भिवाड़ी (राजस्थान) में रहती हैं। हिंदी वे साहित्य में एमए के अलावा बीएड हैं और राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में प्रवक्ता रही हैं। कविता, कहानियां व समीक्षा लिखने के साथ ही मंच संचालन के क्षेत्र में भी आपका ख़ासा दख़ल रखती हैं। चित्रकला और अभिनय में आपकी गहरी रुचि ही नहीं वरन् इस क्षेत्र में आप पारंगत भी हैं। 'रेशमी अहसास' कहानी संग्रह, 'शुचित्र पन्ने', 'उतर गया चांद जल में,' 'तुम केवल मेरे हो', 'छप्पन भोग', कविता संकलन और 'क़तरा-क़तरा रात पिघलती' (ग़ज़ल संकलन) के अलावा बारह साझा संकलनों में आपकी बीसियों कविताएं संकलित हैं। आकाशवाणी से आपकी रचनाओं का प्रसारण होता रहा है। निर्दलीय सहित देश के अनेक सुप्रतिष्ठित पत्र- पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। पांच पुस्तकों का संपादन आपने किया है। विभिन्न 750 साहित्य संस्थानों व्दारा आपको सम्मानित किया जा चुका है। आपकी कविता में प्रेम के विभिन्न रूप परिलक्षित हैं। उनका मानना है कि प्रेम में वह ताक़त है जो दुनिया में आपसी रिश्ते मजबूत बना सकता है और आतंक हिंसा को समाप्त कर सकता है। प्रेम को सरल अर्थों में नहीं देखा जाना चाहिए, वरन इसे विराट स्वरूप में ग्रहण किया जाए। सरिता जी की कविताओं की भाषा अत्यंत सरल और अर्थ पारदर्शी एवं बहुआयामी हैं। कविताओं की आवाज़ बहुत दूर तक जाती है। उनमें दुर्लभ अर्थ विस्तार है। बारबार इनकी रचनाएं पढ़ने पर कई अर्थ खुलते हैं।

यदि होती मैं!

सोचा करती हूँ मैं अक्सर
नए ख्याल मुझको आते
साथ सदा रहती मैं उनके
जुदा कभी ना हो पाते
काश कभी अपने प्रियवर का
चश्मा जो मैं बन पाती
बैठ नाक पर उनकी मैं भी
जीभर कर फिर इतराती
दूर न करते कभी मुझे वो
सदा खूब ही दुलराते
बहुत हिफाजत से रखते फिर
दूरी कभी न सह पाते
कर थामे अख़बार कभी वो
खोज नहीं मुझको पाते
सिर पर बैठी मैं मुस्काती
मुझे ढूँढते चिल्लाते
कान पकड़ कर सुबह-शाम मैं
उनके सिर पर चढ़ जाती
पास सदा रह कर उनसे मैं
नख़रे अपने उठवाती
कभी-कभी थक कर वो अपनी
छाती पर मुझको रखते
तब आलिंगन का सुख देकर
थोड़ा सुख वह भी चखते
तकिये के नीचे रख मुझको
कभी चैन से सो जाते
कभी दबा करतल में मुझको
शयन-लाभ का सुख पाते
कुर्ते के कोने से अपने
मुझे पोंछते नहलाते
गिर जाती कभी यदि हाथ से
उठा नेह से सहलाते
उनका चश्मा बन जाऊँ यदि
पल भर अलग न हो पाऊँ
सदा-सदा आँखों में बसकर
मैं भी उनमें खो जाऊँ।

- 'सरि'

विपरीत राज योग: विश्लेषण

आलोक श्रीवास्तव
ज्योतिषाचार्य

ज्योतिष शास्त्र में योगों का बहुत महत्व है। इनमें से एक है विपरीत राज योग। यह योग तब बनता है जब किसी जन्मकुंडली में त्रिक भाव यानी 6वां, 8वां और 12वां भाव (जो सामान्यतः अशुभ माने जाते हैं) के स्वामी ग्रह एक-दूसरे के घर में, या अपने ही त्रिक भाव में बैठते हैं।

यह कब बनता है?

यदि षष्ठ भाव का स्वामी षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में हो। यदि अष्टम भाव का स्वामी षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में हो। यदि द्वादश भाव का स्वामी षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में हो, तब विपरीत राजयोग बनता है। जब ऐसा होता है तो व्यक्ति कठिनाइयों, विपत्तियों और बाधाओं से जूझने के बाद अचानक सफलता, मान-सम्मान और धन की प्राप्ति करता है।

इसका महत्व- सामान्यतः 6, 8 और 12 भाव अशुभ होते हैं लेकिन जब इन भावों के स्वामी एक-दूसरे के घरों में हों तो अशुभता कम होकर शुभ परिणाम देने लगती है। इसीलिए इसे विपरीत से राजयोग कहा जाता है। यानी कठिनाई और विपत्ति से ही राजयोग की स्थिति बनना।

लाभ और प्रभाव- व्यक्ति संकटों से निकलकर सफलता पाता है। जीवन में कई बार अचानक लाभ और तरक्की मिलती है। शत्रु पर विजय, प्रतियोगिता में सफलता और आर्थिक उन्नति होती है। विदेश यात्रा और आध्यात्मिक उन्नति की संभावनाएँ भी रहती हैं। सरल शब्दों में कहा जाए तो विपरीत राज योग ऐसा योग है जिसमें जीवन की बड़ी कठिनाइयाँ ही व्यक्ति को सफलता और ऊँचाई पर ले जाती हैं।

विपरीत राज योग के मुख्य तीन प्रकार माने जाते हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि कौन सा त्रिक भाव (6, 8, 12) का स्वामी दूसरे त्रिक भाव में बैठा है।

1. हर्ष विपरीत राज योग

जब षष्ठ भाव का स्वामी षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में बैठता है, हर्ष विपरीत राज योग बनता है

परिणाम-

शत्रु पर विजय, रोगों से मुक्ति

प्रतियोगिता व कोर्ट केस में सफलता, प्रशासनिक और सरकारी क्षेत्र में लाभ।

2. सरल विपरीत राज योग

जब अष्टम भाव का स्वामी षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में हो, सरल विपरीत राज योग बनता है।

परिणाम- लंबी आयु, अचानक धन-लाभ, गुप्त ज्ञान या रहस्यमय विद्या में सफलता, संकटों से निकलकर तरक्की।

3. विमल विपरीत राज योग

जब द्वादश भाव का स्वामी षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में हो विमल विपरीत राज योग बनता है?

परिणाम- विलासिता का जीवन, विदेश यात्रा या विदेशी संपर्क से लाभ। आध्यात्मिक उन्नति, व्यय के बावजूद धन व प्रतिष्ठा की प्राप्ति।

-भोपाल

बारिश की बूंदों ने कर दिया कमाल

पूजा दुबे 'मोहिनी'

बारिश की बूंदों ने कर दिया कमाल
प्रकृति क्या सजी है, ए दोस्त क्या है ख्याल
हवा हुई मदमस्त, मौसम हुआ खुशहाल
अल्हड़ हुई ये नदियां, ज़वां हुआ वो ताल
बारिश की बूँदों ने कर दिया कमाल
नदियों का मचलना झरनों का झूमना
मदहोश हवाओं का सर सर बहना
करता है दिल को खुशहाल
बारिश की बूँदों ने कर दिया कमाल
बिजली की चमचमाहट, बादलों की गड़गड़ाहट
झूला झूलती है ये मस्त हवाएं, ये धरा की मनमोहक घटाएं
खूबसूरत नज़ारों ने कर दिया धमाल
यह बारिश यह फिजाएं, करती है। मन की बातें
खुशनुमा हुआ यह दिन और मदहोश हुई रातें
जरा आप भी तो बताएं, अपने दिल का हाल
झुकी हुई नजरों की नजाकत
और खुशबू ऐसी, जैसे कयामत
प्रकृति कि छटा कुछ यूं छा रही है
जैसे दुल्हन कोई घूंघट में शर्मा रही है
देख नज़ारा मौसम का, मैं हो गई निहाल
जंगल की सनसनाहट, पत्तों की फड़फड़ाहट
गूंजती है जैसे हो कोई घुंघरू की आहट
छन्द और कविता से, रुख सब मोड़ देती हूं .
गीतों और गज़लों से, बहम सब तोड़ देती हूं
मोहिनी हूं मैं मोनू की, ये सौभाग्य है मेरा
अलाओं और बलाओं को कान्हा पर छोड़ देती हूं.

-भोपाल